

"Youth Kaleidoscope"

Dear Friends !

Golalariya Darshan has started a new column "Youth Kaleidoscope" in which you can send your articles, stories, poems etc. you many send them in English as well. Golalariya Darshan is eager to hear from you guys!

15 years of transforming my mind into brain!

From the diaries of Aayushi Jain



15 years back when I walked into the gate of a building which my mumma assured me is what they call it a school; my tiny fingers holding my mumma's hand and with a water bottle hanging down my neck and a small fluffy little bag resting on my back, never could I fathom that I would end up writing this post recounting how much have I loved my school life. With endless tears rolling down my cheeks and my head stuffed with a raw mind (which I didn't even know what it means), I entered my classroom and right then and there started this perpetual process of transforming my 'mind' into a 'brain'. From learning to shape A, B, C, D,...to piping up the correct pronunciation, all through the while my mind has been transformed into a brainy brain! Now when I sit down flipping through the pages of this cherished book of my collected memories, I recall all those stupid, silly, innocent moments when I peed into my pants and when my friends peed into their pants, when I cried because my friends teased me and when I teased till my friends cried, when we shared a five rupees canteen ka samosa and when we fought for a paanch waali kit-kat!! These vibrant colors in the pages of my life dazzle me inside and out whenever I reminisce these treasured recollections. Looking down my memory lane, those undone shoelaces and half open dizzied morning eyes unfailingly leave a smile on my lips. Those 15 years of my life when I grew to learn and learnt to grow so beautifully epitomize my innocence being transformed into intelligence. Moving on each day laughing and giggling and crying and worrying and shouting and screaming, every day I learnt something new. With never ending deadlines and projects and assignments I learnt to be punctual. Those unpleasant scoldings of teachers and numerous episodes of "Get out of my class!" punishments now become all the more amiable when looked upon superficially. Such is my book of life colored with the vivacious colors of this second home. And after 15 years of this crazy journey through the thick and thin of my life's stages, here do I stand with my naive mind now completely transformed into an astute brain preparing itself to enter into an another world full of constant changes and changing constants...

So..to all my dear friends! Sing your songs, dream your dreams, hope your hopes and pray your prayers. Enjoy these little things in your school life for one day you may look back and realize that they were the big things!

अपेक्षा

यदि हमें जीवन में खुश रहना हो तो कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखना चाहिए। यदि हम किसी से कोई अपेक्षा रखते हैं, और वह उस पर खरा नहीं उतरता, तो दुख होता है। उदाहरण के लिए सभी मां-बाप अपेक्षा रखते हैं कि क्लास में उनका बच्चा प्रथम आये लेकिन सभी बच्चे प्रथम आए यह संभव नहीं है। और जब उनका बच्चा प्रथम नहीं आता है तो उन्हें दुख होता है। हमें बच्चों से किसी भी प्रकार की अपेक्षा न रखते हुए यह देखना चाहिए कि बच्चे की रुचि किस चीज में है। जैसे कि सीगिंग, डांसिंग या खेलकूद आदि में। जिस भी चीज में रुचि है उसी दिशा में उसे आगे बढ़ाना चाहिए। जरूरी नहीं कि सभी बच्चों पढ़ाईकर डाक्टर या इंजीनियर ही बनें। सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ बहुत से ऐसे नाम हैं जिन्होंने खेल में अपना व अपने देश का नाम ऊंचा किया है। आखिर में मैं यही कहना चाहूंगी कि अपेक्षा रखनी है तो अपने आप से रखो कि कैसे हम अपने आप को और श्रेष्ठ कैसे बना सकते हैं।



- नीति जैन

आस्था

पर्वतारोहियों का एक दल अजेय पर्वत पर विजय पाने के लिए निकला। उनमें एक अति-उत्साही पर्वतारोही भी था, जो यह चाहता था कि पर्वत शिखर पर विजय पताका फहराने का श्रेय उसे ही मिले। रात्रि के घने अंधकार में वह अपने तंबू से चुपके से निकल पड़ा और अकेले ही उसने पर्वत पर चढ़ना आरंभ किया। बहुत प्रयास करने के बाद शिखर जब कुछ ही दूर प्रतीत हो रहा था तभी अचानक उसका पैर फिसला और वह तेजी से नीचे की तरफ गिरने लगा। उसे अपनी मृत्यु सामने ही दिख रही थी, लेकिन उसकी कमर से बँधी रस्सी ने झटके से उसे रोक दिया। घने अंधकार में उसे नीचे कुछ नहीं दिख रहा था। रस्सी को जकड़कर ऊपर पहुँच पाना संभव नहीं था। बचने की कोई सूत्र न पाकर वह चिल्लाया, 'हे ईश्वर... मेरी मदद करो!' तभी अचानक एक गंभीर स्वर कहीं गूँज उठा, 'तुम मुझसे क्या चाहते हो? क्या तुम्हें सच में विश्वास है कि मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ। पर्वतारोही बोला, 'हाँ ईश्वर! मुझे तुम पर पूरा विश्वास है'

'ठीक है, अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास है तो अपनी कमर से बँधी रस्सी काट दो', वही आवाज गूँजी। यह सुनकर पर्वतारोही का दिल डूबने लगा। कुछ क्षण के लिए वहाँ एक चुप्पी-सी छा गई और उस पर्वतारोही ने अपनी पूरी शक्ति से रस्सी को पकड़े रहने का निश्चय कर लिया। अगले दिन बचाव दल को रस्सी के सहारे लटका हुआ पर्वतारोही का ठंड से जमा हुआ शव मिला। उसके हाथ रस्सी को मजबूती से थामे थे और वह धरती से केवल दस फुट की ऊँचाई पर था। यदि उसने रस्सी को छोड़ दिया होता तो वह पर्वतीय ढलान से लुढ़कता हुआ मामूली नुकसान के साथ जीवित बच गया होता।



- महक जैन, तिलक नगर, इन्दौर

बिना मात्रा के चार का कमाल

एक सब्जी का नाम	-	परवल
एक रसोईघर की चीज	-	बरतन
स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है	-	कसरत
एक वृक्ष का नाम	-	बरगद
एक बीमारी का नाम	-	अलसर
एक गायक का उपनाम	-	सहगल
एक रिश्तेदार	-	समघन
एक प्रकार का मनोरंजन	-	सरकस
एक जानवर	-	अजगर
एक फिल्म का नाम	-	सरगम
शरीर का एक अंग	-	गरदन
जीवन की एक अवस्था	-	बचपन
जहां सैनिक तैनात रहते हैं	-	सरहद
एक सोते समय की क्रिया	-	करवट
एक पौष्टिक चीज	-	खसखस

- मार्मिका समीर जैन, कक्षा 10वीं
तिलक नगर, इन्दौर

लघु कथा

मित्र महोदय आज की पीढ़ी को कोस रहे थे। आजकल के बच्चे माँ बाप को सम्मान नहीं

करते, बड़ों को आदर नहीं देते, अपने दायित्वों को नहीं समझते, संस्कार विहीन होते जा रहे हैं, वगैरह वगैरह। कुछ देर बाद दूसरे शहर में रह रहे उनके वृद्ध पिताजी का फोन आया। पूर्व में उन्होंने किसी कार्य को करवाने का कहा होगा। उसी सिलसिले में पुनः अनुरोध कर रहे थे शायद। मित्र का पारा गरम हो गया और भड़क कर बोले - पिताजी आपने पहले भी कहा था कि अभी मेरे पास समय नहीं है,



बहुत काम है। पर आप हैं कि समझते ही नहीं। आप तो रिटायर्ड हो चुके हैं, निठल्ले हैं, सटिया गये हैं, अपनी ही ढपली बजाते रहते हैं, किसी की परेशानी समझते ही नहीं... कहकर गुरसे से फोन पटक दिया।

- विजित जैन, म्वालयर

णमोकार शक्ति

पिछले साल अचानक डॉक्टरों ने बताया कि मुझे ब्रेन ट्यूमर है और जल्दी से जल्दी उसका ऑपरेशन करना जरूरी है। मेरे मम्मी पापा मुझे मुंबई ले गये और वहाँ हिन्दुजा अस्पताल में भर्ती करा दिया। दूसरे दिन सवेरे मेरा ऑपरेशन करना तय हुआ। मेरे मन में थोड़ा डर



और घबराहट हो रही थी पर मेरे मम्मी पापा ने मुझे समझाया और हिम्मत दी। मम्मी ने कहा, तुम्हें कुछ नहीं होगा बेटे, तुम सिर्फ णमोकार मंत्र का जाप करते रहना। देखना तुम जल्दी से अच्छे हो जाओगे। ऑपरेशन थियेटर पहुँचने पर डाक्टरों ने मम्मी को बाहर ही रोक दिया और मुझे अन्दर ले गये। मैं मन ही मन में णमोकार मंत्र का जाप करता रहा और पता नहीं कब सो गया (बेहोश हो गया)। जब आँख खुली तो मैं आई.सी.यू. में था और मेरे सिर पर पट्टी बंधी थी। धीरे धीरे मैं ठीक हो गया और घर आ गया। आज मैं बिल्कुल अच्छा हूँ और अपने अंदर णमोकार मंत्र की शक्ति को महसूस करता हूँ। हम सबको रोज णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिये।

- संस्कार जैन, कक्षा 7वीं
विजय नगर, इन्दौर